एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

क्या आप जानते हैं सूर्य देव के ऐसे मंदिर के बारे में जहां आती हैं

नर्तकियों की आत्माएं

कोणार्क के बारे में एक मिथक और भी है कि यहां आज भी नर्तकियों की आत्माएं आती हैं। अगर कोणार्क के पुराने लोगों की मानें तो आज भी यहां आपको शाम में उन नर्तकियों के पायलों की झंकार सुनाई देगी जो कभी यहाँ यहां राजा के दरबार में नृत्य करती थीं।

सूर्य की पूजा करने के लिए हिंदू धर्म के वेदों में बताया गया है। हर प्राचीन ग्रंथों में सूर्य की महत्ता का वर्णन किया गया है। कहा जाता है सूर्य भगवान की आराधना करने से शरीर में सकारात्मक ऊर्जा आती है। हिंदू धर्म के सूर्य ही एक ऐसे देवता हैं जो प्रत्यक्ष रूप से आंखों के सामने हैं। हम सूर्य भगवान की आराधना उनको देख कर कर सकते हैं। लेकिन जैसा कि हमारे देश में प्रथा है भगवान के मंदिर बनवाने की इसी के आधार पर बरसों पहले कुछ हिंदू राजाओं ने एक भव्य सूर्य मंदिर का निर्माण करवाया।

ओडिशा में स्थित कोणार्क का सूर्य मंदिर भगवान सूर्य को समर्पित है। ये मंदिर भारत की प्राचीन धरोहरों में से एक है। इस मंदिर की भव्यता के कारण ये देश के सबसे बड़े १० मंदिरों में गिना जाता है।

कोणार्क का सूर्य मंदिर ओडिशा राज्य के पुरी शहर से लगभग 23 मील दूर नीले जल से लबरेज चंद्रभागा नदी के तट पर स्थित है। इस मंदिर को पूरी तरह से सूर्य भगवान को समर्पित किया गया है इसीलिए इस मंदिर का संरचना इस प्रकार की गई है जैसे एक रथ में 12 विशाल पहिए लगाए गये हों और इस रथ को 7 ताकतवर बड़े घोड़े खींच रहे हों और इस रथ पर सूर्य देव को विराजमान दिखाया गया है। मंदिर से आप सीधे सूर्य भगवान के दर्शन कर सकते हैं। मंदिर के शिखर से उगते और ढलते सूर्य को पूर्ण रूप से देखा जा सकता है। जब सूर्य निकलता है तो मंदिर से ये नजारा बेहद ही खूबसूरत दिखता है। जैसे लगता है सूरज से निकली लालिमा ने पूरे मंदिर में लाल-नारंगी रंग बिखेर दिया हो। मन्दिर के आधार को सुन्दरता प्रदान करते ये बारह चक्र साल के बारह महीनों को परिभाषित करते हैं तथा प्रत्येक चक्र आठ अरों से मिल कर बना है, जो अर दिन के आठ पहरों को दर्शाते हैं। यहां पर स्थानीय लोग प्रस्तुत सूर्य-भगवान को बिरंचि-नारायण कहते थे। यह मंदिर अपनी अनूठी वास्तुकला के लिए दुनियाभर में मशहूर है और ऊंचे प्रवेश द्वारों से घिरा है। इसका मूख पूर्व में उदीयमान सूर्य की ओर है और इसके तीन प्रधान हिस्से- देउल गर्भगृह, नाटमंडप और जगमोहन (मंडप) एक ही सीध में हैं। सबसे पहले नाटमंडप में प्रवेश द्वार है। इसके बाद जगमोहन और गर्भगृह एक ही जगह पर स्थित है।

इस मंदिर का एक रहस्य भी है जिसके बारे में कई इतिहासकरों ने जानकारी इकट्ठा की है। पुराणानुसार कहा जाता है कि श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब को श्राप से कोढ़ रोग हो गया था। उन्हें ऋषि कटक ने इस श्राप से बचने के लिये सूरज भगवान की पूजा करने की सलाह दी। साम्ब ने मित्रवन में चंद्रभागा नदी के सागर संगम पर कोणार्क में बारह वर्ष तपस्या की और सूर्य देव को प्रसन्न किया। सूर्यदेव, जो सभी रोगों के नाशक थे, ने इसका रोग भी अन्त किया। कोणार्क के बारे में एक मिथक और भी है कि यहां आज भी नर्तकियों की आत्माएं आती हैं। अगर कोणार्क के पुराने लोगों की मानें तो आज भी यहां आपको शाम में उन नर्तकियों के पायलों की झंकार सुनाई देगी जो कभी यहाँ यहां राजा के दरबार में नृत्य करती थीं।

लिलियम के फूलों की खेती ने

किसानों को एक नई राह दिखाई

यह अनुमान लगाया गया है कि दुनिया के कुल सालाना कारोबार में कंदीय फूलों का तकरीबन 12000 करोड़ का व्यापार है। सिर्फ 7० दिन की बागवानी वाला लिलियम किसानों के लिए फायदेमंद का साबित हो रहा है।

जी हां, बंजर जमीन पर अब लिलियम के फूल लहलहा रहे हैं। आज जब खेती की उपजाऊ जमीन लगातार बंजर होती जा रही है, ऐसे में लिलियम के फूलों की खेती ने किसानों को एक नई राह दिखाई है। लिलियम ठंडी आबोहवा का बेहद खूबसूरत फूल है। दुनिया भर में कंदीय फूलों में ट्यूलिप के बाद लिलियम ही ऐसा फूल है, जिसकी खासी मांग है। सजावट में यह बहुत काम आता है, जिसकी वजह से बाजार में इसकी अच्छी कीमत मिल जाती है। दुनिया भर में इसकी खेती की जाती है। इसकी खेती के लिए बल्ब हॉलैंड से मंगाया जाता है। एक अनुमान के मुताबिक भारत हॉलैंड से तकरीबन 15-2० लाख बल्बों का आयात करता है। यह अनुमान लगाया गया है कि दुनिया के कुल सालाना कारोबार में कंदीय फूलों का तकरीबन 12००० करोड़ का व्यापार है।

सिर्फ 7० दिन की बागवानी वाला लिलियम किसानों के लिए फायदेमंद का साबित हो रहा है। एक एकड़ में 9० हजाजार से एक लाख फूल तैयार हो जाते हैं। किसानों को प्रति एकड़ 12 से 15 लाख रुपये तक की आमदनी हो सकती है। बागवानी विभाग लिलियम की खेती पर 5० फीसद अनुदान दे रहा है, जबकि नेट पॉली हाउस लगाने पर 65 फीसद अनुदान दिया जा रहा है। यूं तो जम्मू-कशमीर, हिमाचल और उत्तराखंड की जलवायु इसकी खेती के लिए उत्तम है, लेकिन अब देश के अन्य हिस्सों जैसे पंजाब और हरियाणा में भी किसान लिलियम की खेती कर रहे हैं।

उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले के गांव हड़ौली के किसान प्रभाकर भाकुनी पिछले कई सालों से लिलियम के फूलों की खेती कर रहे हैं। उनका कहना है कि बाजार में लिलियम के एक फूल की कीमत 4० से 5० रुपये है. अगर किसान खुद फूलों के कारोबारियों से संपर्क कर अपनी पैदावार बेचे, तो उसे बहुत अच्छी आमदनी हासिल हो सकती है। उनका यह भी कहना है कि लिलियम की खेती बेरोजगारों के लिए आमदनी का एक बेहतर जरिया है। हरियाणा के फतेहाबाद के किसान सुमित गडवाल और भिवानी जिले के गांव ढाणी किरावड़ के किसान राजेश श्योराण भी लिलियम के फूलों की खेती कर रहे हैं। उन्होंने सात एकड़ में लिलियम उगाया था। राजेश श्योराण के मुताबिक पारंपरिक खेती से उन्हें ज्यादा आमदनी नहीं हो पा रही थी। फिर उन्होंने लिलियम की खेती के बारे में सुना और फिर नेट से जानकारी इकट्ठा की। इसके बाद उन्होंने हिमाचल में जाकर लिलियम की खेती कर रहे किसानों से प्रशिक्षण लिया। उन्होंने तीन एकड़ जमीन में लिलियम की खेती शुरू की। इसके लिए उन्होंने लिलियम के बल्ब मंगाए। बल्ब एक तरह की गांथ होती है, जिससे तीन बार लिलियम की खेती की जा सकती है। एक बल्ब की कीमत 15 से 2० रुपये होती है और एक एकड़ में तकरीबन 8० बल्ब लगाए जाते हैं। गौरतलब है कि आज के दौर में दुनियाभर में जहां फूलों की मांग दिनोंदिन बढ़ रही है, ऐसे में किसान फूलों की खेती करके अच्छी आमदनी हासिल कर सकते हैं।

जहर भी बन सकता है पानी, जानिए इसे कैसे बनाएं अमृत

कुछ लोग भोजन के साथ हमेशा एक गिलास पानी अवश्य रखते हैं। अगर आपकी भी यही आदत है तो आज ही इसे बदल दीजिए। कभी भी भोजन के साथ पानी न पीएं। इससे भोजन की पाचन प्रक्रिया स्लो होती है। शरीर के लिए पानी से महत्वपूर्ण दूसरी चीज शायद ही हो। चूंकि मनुष्य का आधे से अधिक शरीर पानी से ही बना है और शरीर की सभी गंदगी को प्राकृतिक तरीके से निकालने में पानी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इसलिए दिन में आठ से दस गिलास पानी पीने की सलाह दी जाती है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि पानी पीने का भी अपना एक तरीका होता है, अन्यथा इस अमृत को जहर में बदलते देर नहीं लगती। गलत समय पर गलत तरह से पिया गया पानी शरीर को सिर्फ और सिर्फ नुकसान ही पहुंचाता है। तो चलिए जानते हैं पानी पीने के कुछ नियमों के बारे में-

पीएं खाली पेट

सुबह उठकर व्यक्ति को सबसे पहले पानी ही पीना चाहिए। इससे व्यक्ति को पेट संबंधी परेशानियां जैसे कब्ज या अपच आदि समस्याएं नहीं होती और पेट भी ठीक तरह से साफहोता है। यह पूरी तरह आपके उपर है कि तांबे में रखा पानी पीएं या गर्म पानी पीएं या फिर पानी में नींबू व शहद मिलाएं। आप किसी भी तरह से पानी लें लेकिन एक या दो गिलास पानी अवश्य पीएं।

भोजन के साथ नहीं

कुछ लोग भोजन के साथ हमेशा एक गिलास पानी अवश्य रखते हैं। अगर आपकी भी यही आदत है तो आज ही इसे बदल दीजिए। कभी भी भोजन के साथ पानी न पीएं। इससे भोजन की पाचन प्रक्रिया स्लो होती है। अगर आपको पानी पीने की जरूरत महसूस हो रही हैं तो महज एक या दो घूंट ही पानी पीएं। साथ ही कोशिश करें कि आप ठंडे पानी के स्थान पर गुनगुना पानी पीएं। वैसे भोजन से एक घंटे पहले पानी पीना काफी अच्छा माना जाता है। ऐसा करने से व्यक्ति की भूख पर नियंत्रण होता है और व्यक्ति अधिक कैलोरी का सेवन करने से बच जाता है, जिससे वजन भी नियंत्रित रहता है।

हमेशा पीएं बैठकर

अक्सर हम घरों में देखते हैं कि लोग हमेशा जल्दी में होते हैं और कहीं भी आते-जाते या गर्मी के मौसम में सीधे ही फ्रिज से निकालकर पानी पीते हैं। लेकिन उनकी यही खड़े होकर पानी पीने की आदत सेहत को नुकसान पहुंचाती है। सबसे पहले तो ऐसा करने से व्यक्ति को तृप्ति का अहसास नहीं होता। साथ ही ऐसा करने से व्यक्ति के जोड़ों में भी दर्द की शिकायत होती है। इसलिए हमेशा बैठकर व आराम से ही पानी पीएं। एक साथ एक गिलास पानी पीने की बजाय घूंट-घूंटकर पानी पीना अच्छा रहेगा।